

مُحَمَّدٌ



اللَّهُ

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

इन्नल्लाह व मलाइकतहू युसल्लून अलन्नबीय्यी या अय्यूहल्लजीन
आमनू सल्लू अलैही व सल्लीमू तसलीमा. (कुरआन : सूरए अहजाब ५२)

तर्जुमा : बेशक अल्लाह और उसके फरिश्ते रहमत भेजते हैं नबीपर
ए इमानवालों आप भी दरुद और सलाम भेजीये नबीपर ।

जो शख्स सुबह शाम दस दस मरतबा दरुद शरीफ पढलें कयामत के दिन उसको हुजूर ﷺ की शफाअत नसीब होगी । नीज ये भी है जो आदमी सौ मरतबा दरुद शरीफ पढता है अल्लाह तआला उसकी पेशानी पर लिख देतें हैं के ये आदमी निफाक से भी बरी है और जहन्नम से भी बरी है और कियामत के दिन शहिदों के साथ उसको जमा फरमायेंगे और अल्लाह उस पर एक हजार मरतबा दरुद भेजेंगे ।

दीनी और दुनयावी बरकतों पर शामिल



दरुद शरीफ का मजमुआ



मुर्त्तिब

क़ारी अहमद अली साहब फलाही

उस्तादे हदीस दारुल फैजे सुलेमानी

नाशिर

मज़लिसे फैजे सुलेमानी

मोटी नरोली, ता. मांगरोल, जि. सुरत (गुजरात)

डिज़ाईन / प्रिटींग

प्रिंटवेल

850, खणभाग, सय्यद अमीन रोड, सांगली. (महाराष्ट्र) मो.: 9921411386

नोट : इस किताब में जो अरबी दरुद शरीफ हिंदीमें लिखी गई हैं। जितना हो सके उतना उसे अरबी में पढा जाए ताके हमारी पढने की अदा अदाये रसुल के मुताबिक हो।

रोजी में बरकत के लिए दरुद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلٰى الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَعَلٰى الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ. (زاد السعيد)

अल्लोहम्म सल्लि अला मुहम्मदीन अब्दिक व रसूलिक व अलल
मुअ्मिनीन वल मुअ्मिनाति व अलल मुस्लिमीन वल मुस्लिमात.

फज़ीलत : हज़रत अबू सईद खुदरी رضي الله عنه से रिवायत है के जो शख्स
अपना माल बढ़ाना चाहता हो वो ये दरुद शरीफ पढ़ा करे। (जादुससईद)

हज़रत अबूबकर (रजि.) का दरुद शरीफ

हज़रत अबूबकर सिद्दीक رضي الله عنه ने पूछा या रसूलल्लोह ﷺ अल्लोह तआला ने
हम को आप पर दरुद पढ़ने का हुक्म दिया के आप पर दरुद पढ़ें, आप बताएं के
कौनसा दरुद शरीफ आप पर पढ़ें हुजूर ﷺ ने फरमाया ये दरुद पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ فِيْ الْاَوَّلِيْنَ
وَالْاٰخِرِيْنَ وَفِي الْمَلَا الْاَعْلٰى اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ.

अल्लोहम्म सल्लिअला मुहम्मदिंव व अला आली मुहम्मदिन फिल
अव्वलीन वल आखिरीन वफिल मलइल अअ्ला इला यौमिद्दीन.

फज़ीलत : हज़रत अबूबकर सिद्दीक رضي الله عنه ने पूछा या रसूलल्लोह ﷺ आप मुझे इस
दरुद के सवाब से आगाह कीजिए। आपने फरमाया के अगर तमाम समंदर रौशनाई और तमाम
दरख्त कलम और तमाम फरिश्ते इस दरुद के लिखनेवाले बन जाएं तो रौशनाई फना हो जाए
और कलम टूट जाएं और फरिश्ते थक जाएं तब भी इस दरुद के सवाब को न पहुंचें। इस दरुद
का सवाब को तो सिर्फ खुदावंदे कुदुस ही लिखनेवाले हैं। (नुज़हतुल मजालिस, जिल्द दुव्वम)

70 फरिश्तों का 1000 दिन तक इस्तिगफार में लगे रहने का दरुद शरीफ

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا هُوَ اَهْلُهُ.

जज़ल्लोहु अत्रा मुहम्मदन सल्लल्लोहु अलैही व सल्लम मा हुव अहलुहु.

फज़ीलत : 70 फरिश्ते 1000 दिन तक इस दरुद शरीफ का सवाब
लिखते लिखते थक जाते हैं। (तबरानी, मुअजमे कबीर, फजाइले आमाल-फजाईले दरुद शरीफ)

जुमआ के दिन असर की नमाज के बाद पढ़नेवाला दरुद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ
الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا ط

अल्लोहम्म सल्लि अला मुहम्मदि निन नबियिल
उम्मियि व अला आलिही वसल्लिम तस्लीमा.

फज़ीलत : हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه हुज़ूरे अक़दस عليه السلام का इरशाद नकल करते हैं
के जो शख्स जुमआ के दिन नमाजे असर के बाद अपनी जगह से उठने से पहले 80 मरतबा
ये दरुद शरीफ पढ़े उसके 80 साल के गुनाह माफ होंगे और 80 साल की इबादत का सवाब
लिखा जाएगा। खवातीन (औरतें) खुद को इस नेअमत से मेहरुम न समझें वो भी इस पर
अमल करके नेकियों का जखीरा (खजाना) इकट्ठा करें।

कब्र के आसानी के लिए दरुद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُونَ
وَكُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُونَ (زاو السعيد، القول البدیع)

अल्लोहम्म सल्लि अला मुहम्मदिन कुल्लमा ज़करहूज़ाकिरुन
वकुल्लमा गफल अन ज़िकरिहिल गाफिलून.

फज़ीलत : इमाम इस्माईल(रह.) ने इमाम शाफई(रह.)को ख्वाब में देखा तो पूछा
के अल्लोह तआला ने आपके साथ कैसा बरताव किया ? तो इमाम शाफई (रह.)ने जवाब
दिया के अल्लोह पाक ने एक दरुद शरीफ की बरकत से मेरी मगफिरत कर दी और इज्जत व
एहताराम के साथ मेरी रुह को जन्नत में ले जाने का हुक्म फरमाया और वो दरुद शरीफ ये है।
(जादुरसईद, अल्कवूलुल बदीअ)

कर्ज़ अदायगी के लिए दरुद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लोहम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव वअला आलिही व बारिक वसल्लिम.

फज़ीलत : जो शख्स ऐसा चाहता हो के कभी भी उसके सर पर कर्ज़ न हो और अगर हो भी

जाए तो जल्दी से छुटकारा हो, तो उसे जुहर की नमाज के बाद १०० मर्तबा ये दरुद शरीफ पढ़ना चाहिये। तो अल्लोह तआला उसे कर्ज से बचाएंगे और अगर उसके सर पर कर्ज हो भी गया हो तो गैब से कर्ज की अदायगी का बंदोबस्त फरमाएंगे। (ज़रिअतुल वुसूल)

मनपसंद रिश्ते के लिए दरुद शरीफ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ذِي الْعِزِّ وَالْكِبَرِيَّاءِ، وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ الْاَنْبِيَاءِ

अलहम्दु लिल्लाहि ज़िल इज़्ज़ि वल किब्रियाइ,

वसल्लल्लाहु अला मुहम्मदिन खातमिल अम्बियाइ.

फज़ीलत : जो लड़का या लड़की खुद की मनपसंद जगह पर रिश्ता करना चाहते हों उन्हें ये दरुद शरीफ कसरत से पढ़ते रहना चाहिये। (ज़रिअतुल वुसूल)

पुलसिरात पर आसानी के साथ गुज़रने के लिए दरुद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنْ صَلَاتِكَ شَيْءٌ،

اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنْ سَلَامِكَ شَيْءٌ،

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنْ بَرَكَاتِكَ شَيْءٌ

अल्लोहम्म सल्लि अला मुहम्मदिन हत्ता ला यब्का मिन सलातिक शैउन,
अल्लोहम्म सल्लिम अला मुहम्मदिन हत्ता ला यब्का मिन सलामिक शैउन,
अल्लोहम्म बारिक अला मुहम्मदिन हत्ता ला यब्का मिम बरकातिक शैउन.

फज़ीलत : जो शख्स कसरत से ये दरुद शरीफ पढ़ेगा तो जब पुलसिरात पर से गुज़रेगा तो उसका चेहरा चौधवीं के चाँद जैसा चमकता होगा। (तोहफ-ए-सुलैमानी)

छींक आने के बाद के लिए दरुद शरीफ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى اَهْلِ بَيْتِهِ

अलहम्दु लिल्लाहि अला कुल्लि हालिंव व सल्लल्लोह अला
मुहम्मदिंव व अला अहली बैतिही.

फज़ीलत : जो शख्स छींक आने पर ये दरुद शरीफ पढ़ेगा तो अल्लोह तआला की तरफ से एक परिन्दा पैदा किया जाएगा, जो अर्श के नीचे खुद के पर हिलाएगा और अर्ज़ करेगा के इस दरुद शरीफ के पढ़नेवाले को बरख़ा दिया जाए। (ज़रिअतुल वुसूल)

अफ़ज़ल दरुद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ
الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلِّمْ

अल्लोहम्म सल्लि अला मुहम्मदि निन नबिखिल उम्मिखिल हबीबिल
आलिल कद्रिल अज़ीमिल जाहि व अला आलिही व सहबिही वसल्लिम.

फज़ीलत : जो शरूस् हर जुमआ की रात में ये दरुद शरीफ पढ़ेगा। चाहे एक ही मरतबा पढ़े।
जब वो मरेगा तो आप ﷺ अपने मुबारक हाथोंसे उसे कब्र में उतारेंगे। (ज़ादुल मुत्तकीन)

हुज़ूर ﷺ से नजदिकी पैदा करने का ज़रिया

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

अल्लोहम्म सल्लि अला मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु वतरज़ा लहू.

फज़ीलत : एक मरतबा हुज़ूर ﷺ ने एक सहाबी को अपने और हज़रत अबूबकर ﷺ के
दरमियान बिठाया। सहाबा किराम ﷺ को इस पर तअज़ुब हुवा तो आप ﷺ ने
फरमाया ये मुझ पर एक खास दरुद पढ़ता है और मेरा जो भी उम्मीती ये दरुद पढ़ेगा
वो आखिरत की हर मंज़िल में मुझसे करीब रहेगा। (ज़रिअतुल वुसूल)

हुज़ूर ﷺ की शफाअत वाजीब करनेवाला दरुद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ
وَاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ

अल्लोहम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिंव व
अन्ज़िल्हूल मक़अदल मुकर्रब इन्दक यौमल कियामती

फज़ीलत : हज़रत रुवैफा बिन साबित ﷺ रिवायत करते हैं के हुज़ूर ﷺ ने फरमाया के
जो शरूस् मुझ पर ये दरुद शरीफ पढ़ेगा, कयामत के दिन में जरूर उसकी शिफारिश करूंगा।

(तबरानी)

गुनाहों की मगफिरत करनेवाला दरुद शरीफ

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلِّمْ.

ला इलाह इल्लल्लोह, अल्लोहम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिन सलल्लोहु अलैही वसल्लम.

फज़ीलत : नबी-ए-करीम ﷺ ने फरमाया जो शरूस् ये दरुद शरीफ पढ़ता है तो अल्लोह तआला

एक खूबसूरत परिन्दा पैदा करते हैं। उसे दो पर होते हैं, उसकी आवाज़ बिजली की तरह होती है। वो अल्लोह के अर्श की तरफ जाता है और शोरो गुल करता है तो अर्श उठानेवाले फरिश्ते भी घबरा जाते हैं। तो अल्लोह तआला फरमाते हैं के रुक जा, सबर कर तो वो परिन्दा कहता है के मैं किस तरह सबर करूं। दरुद पढ़नेवाले को अभी तक मगफिरत नहीं हुई। इसी तरह तीन मरतबा सवाल जवाब होता है। आखिर में अल्लोह तआला फरमाते हैं के सबर कर, मैंने दरुद शरीफ पढ़नेवाले की मगफिरत कर दी। तब वो परिन्दा रुकता है।

(मनासिरुल हसनात, जादुल मुत्तकीन)

❁❁ दरुद शरीफ ❁❁

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ
صَلَاةً تَكُوْنُ لَكَ رِضٰى وَلِحَقِّهٖ اَدَاًءٌ.

अल्लोहुम्म सल्ली अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन
सलातन तकूनु लक रिज़ंव वलिहकिही अदाअन.

फजीलत : हुजूर ﷺ ने फरमाया जो इस दरुद को तैंतीस (३३) मरतबा रोजाना पढ़ेगा
तो उस की कब्र से हुजूर ﷺ की कब्र तक रोशनी होगी। (जादुल मुत्तकीन)

❁❁ कयामत में नेकियों के पल्ले को भारी करनेवाला दरुद शरीफ ❁❁

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ وَاَزْوَاجِهِ اُمَمَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَذُرِّيَّتِهِ وَاَهْلِ بَيْتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ

(القول البدیع)

अल्लोहुम्म सल्लि अला मुहम्मदि निन नबियि व अज़वाजिही उम्महातिल मुअ्मिनीन
वजुरिय्यतिही व अहलि वैतिही कमा सल्लैत अला इब्राहिम.

फजीलत : हज़रत अबू हरैरह ﷺ ने फरमाया के मैं नबी ए करीम ﷺ को फरमाते
हुवे सुना के जो शरूस् ये चाहे के कयामत के दिन उसकी नेकी का पल्ला सवाब से भर जाए
तो वो ये दरुद शरीफ पढ़ा करें। (अल्कवलूल बदीअ)

❁❁ दरुद शरीफ ❁❁

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِهٖ
صَلُوَةً اَنْتَ لَهَا اَهْلٌ وَهُوَ لَهَا اَهْلٌ

(مناصرالحسنات)

अल्लौहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलिही सलातन अंत लहा अहलुं वहुव लहा अहलुन
फजीलत : अल्लामा सुयूती (रह.) फरमाते हैं के हुजूर ﷺ ने फरमाया के जो कोई शख्स ये दरुद
शरीफ एक मरतबा पढेगा तो उसे 11,000 दरुद शरीफ पढने का सवाब मिलेगा। (मनासिरुल हसनात)

❁ दरुद शरीफ ❁

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ أَلْفَ أَلْفِ مَرَّةٍ (تحفة سليمان)

अल्लौहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन अल्फ अल्फ मरतिन
फजीलत : आप ﷺ ने फरमाया के जो शख्स इस दरुद शरीफ को ज्यादा से ज्यादा
पढेगा तो वो तब तक न मरेगा जब तक खुद का ठिकाना जन्नत में न देख ले। (तुहफ-ए-सुलैमानी)

❁ इम्तिहान में पास होने के लिए आजमाया हुवा दरुद शरीफ ❁

رَبِّ صَلِّ عَلَى نَبِيِّ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَلِّ عَلَيْهِ
كَمَا أَنْتَ أَهْلُهَا وَسَلِّمْ وَشَرِّفْ وَكَرِّمْ دَائِمًا (تحفة سليمان)

रब्बि सल्लि अला नबिय्यिम मुहम्मदिंव व आलिही वसल्लि अलैहि कमा
अनत अहलहा वसल्लिम व शर्रिफ व कर्रिम दाइमन (तोहफ-ए-सुलैमानी)
फजीलत : किसी तरह के इम्तिहान में कामियाब (पास) होने के लिए ये दरुद शरीफ हर
नमाज के बाद 11 मरतबा पढें। अल्लाह तबारक व तआला की ज्ञात से कबी
उम्मीद है के अच्छी तरह कामियाबी मिलेगी।

❁ दुआ ❁

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ (القول البدیع)

व सल्लौहु अला मुहम्मद.

फजीलत : हुजूर ﷺ ने फरमाया के जब तुम किसी मजलीस में बैठो और उठने का वक्त
हो तो ये पढो : इसका फायदा ये होगा के न तो लोग तुम्हारी गीबत करेंगे और न
अल्लौह तुम्हें गीबत में डालेगा। (अल्कबूलुल बदीअ)

❁ एक बहुत अच्छी तस्बीह ❁

سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ

सुब्हानल्लौहिल अज़ीमि व बिहमदिही

फजीलत : हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है के अल्लोह के रसूल ﷺ ने फरमाया के जो शख्स जुमा की नमाज़ के बाद 100 मरतबा ये तस्बीह पढ़ेगा तो अल्लोह पाक उसके हजार गुनाह मुआफ करेंगे और उसके माँ-बाप के 24000 गुनाह मुआफ करेंगे।

(जमरुल फवाइद, अमलूल यौमि वलैलह)

फजीलत : इसी तरह एक रिवायत में आया है के हज़रत कबीसह बिन मुखारिक का बयान है के मैं रसूलुल्लोह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुवा तो आप ﷺ ने आने की वजह पूछी तो मैंने कहा के मुझे ऐसी बात बताओ जिससे अल्लोह तआला मुझे नफा पहुंचाए। तो आप ﷺ ने फरमाया : अय कसीबह अगर तुम सुबह तीन मरतबा

سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ (جمرة الغوايد) सुब्हानल्लौहिल अज़ीमि व बिहमदिही

पढ़ोगे तो जिस दरख्त, पत्थर, दिवार के पास से गुजरोगे वो तुम्हारे लिए इस्तिगफार करेगा और तुम अंधे होने से, कोढ़ से और लकवे से महफूज रहोगे। (जमरुल फवाइद)

दुआ

फजीलत : हज़रत अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है के रसूलुल्लोह ﷺ ने फरमाया जब कोई शख्स सोने के लिए अपने बिस्तर पर आए तो उस वक्त ये दुआ तीन मरतबा पढ़े।

اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ

अस्तगफिरुल्लोहल्लजी ला ईलाह इल्ला हुवल हय्युल कय्यूम व अतूबु इलैहि

तो उसके सारे गुनाह मुआफ हो जाएंगे, चाहे वो समंदर के झाग जितने हों या तो दरख्त के पत्तों जितने हों या दुनिया के तमाम दिनों की तअदाद जितने हों और रेत की कंकरीयों जितने हों। (तिरमिज़ी)

रोज़ी में बरकत की दुआ

يَا أَوَّلَ الْأَوَّلِينَ، يَا آخِرَ الْآخِرِينَ، يَا ذَا الْقُوَّةِ

الْمَتِينِ، يَا رَاحِمَ الْمَسَاكِينِ، يَا رَاحِمَ الرَّاحِمِينَ (کنز العمال)

या अव्वलल अव्वलीन, या आखिरल आखिरीन, या ज़ल कुव्वतिल मतीनि,

या राहिमल मसाकीन, या अरहमर राहिमीन

फजीलत : हज़रत अली رضی اللہ عنہ के घर फाका था हज़रत अली رضی اللہ عنہ के मश्वरे से हज़रत फातिमा (रज़ि.अन्हा)वालिद आप ﷺ के पास गई और सवाल किया तो हुज़ूर ﷺ ने फरमाया के एक महिने से मेरे घर भी फाका है। फिर हुज़ूर ﷺ ने पाँच कलिमात हज़रत फातिमा(रज़ि.अन्हा) को सिखा दिये जो अल्लोह तआलाने जिब्रईल(अलै.)को सिखाया था और अल्लोह तआला ने कसम खा कर फरमाया : जो शख्स ये पाँच कलिमात को बार बार पढ़ा करेगा तो रोजी में बेहद बरकत होगी। हज़रत फातिमा(रज़ि.अन्हा) दुनिया लेने गई थी

और आखिरत लेकर वापस हुई। यह कह कर पीछे लौटी। तो हज़रत अली عليه السلام ने कहा फातिमा! आज का दिन तुम्हारी जिंदगी का सबसे किमती दिन है। (कन्जुल उम्माल)

हज़रत जुनैद बगदादी रह. का बताया हुआ दरुद शरीफ

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ. اللَّهُمَّ صَلِّ
عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَسَلِّمْ.

या हय्यु या कय्यूम ला इलाह इल्ला अन्त. अल्लोहुम्म सल्लिअला मुहम्मदिंव व अलाआलिही व सल्लिम.
फज्जीलत : हज़रत जुनैद बगदादी (रह.) ने हुजूर ﷺ को ख्वाब में देखा तो अर्ज़ की के या रसूलल्लोह ﷺ ऐसी दुआ फरमाएं के मेरे दिल से ईमान कभी दूर न हो। तो आप ﷺ ने फरमाया के ये जुनैद ! अगर कोई एक मरतबा ये कलिमात और दरुद शरीफ पढेगा तो दिल से ईमान कभी दूर न होगा और वो अल्फाज़ ये हैं। (नुज़हतुल मज़ालिस)

मां आइशा (रज़ि.अन्हा) की दुआ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَدْعُوكَ اللَّهُ وَأَدْعُوكَ أَرْحَمَنَ وَأَدْعُوكَ الْبَرَّ الرَّحِيمَ
وَأَدْعُوكَ بِأَسْمَائِكَ الْحُسْنَى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ أَعْلَمْ

अल्लोहुम्म इन्नी अदुअकल्लोह व अदुअकर रहमान व अदुअकल बरर रहीम व अदुअक बिअस्माइकल हुस्ना कुल्लिहा मा अलिम्तु मिन्हा वमा लम अअल्म.
इस्मे आज़म : एक मरतबा मां आइशा (रज़ि. अन्हा) नबीए पाक ﷺ के पास से उठीं और दो रकात नमाज़ पढी और फिर एक दुआ मांगी। मां आइशा (रज़ि.अन्हा) फरमाती हैं के नबीए पाक ﷺ मेरी ये दुआ सुनकर बहोत हंसे और फरमाया के तुमने जिन नामों से अल्लोह तआला को पुकारा उनमें ये खास नाम (इस्मे आज़म) भी शामिल है। (इब्ने माज़ह)

अज़ीम दरुद शरीफ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِنُورِ وَجْهِكَ الْعَظِيمِ الَّذِي مَلَأَ أَرْكَانَ
عَرْشِكَ الْعَظِيمِ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ ذِي الْقَدْرِ الْعَظِيمِ
وَعَلَى آلِ نَبِيِّ اللَّهِ الْعَظِيمِ صَلَاةً دَائِمَةً بِدَوَامِ اللَّهِ الْعَظِيمِ

अल्लोहुम्म इन्नी अस्अलुक बिनूरि वज्हिकल अज़ीमिल्लज़ी मलअ अरकान अर्शिकल अज़ीमि अन नुसल्लिय अला मुहम्मदिन ज़िल कद्रिल अज़ीमि व अला आलि नबियिल्लाहिल अज़ीमि सलातन दाइमतम बिदवामिल्लाहिल अज़ीमी

फजीलत : सिलसिलए नक्शबंदिया के एक बुजुर्ग ख्वाजा अहमद बिन इद्रिस का मक्का मुकर्रमा में इन्तिकाल हुवा। उनके किसी अजीज (रिश्तेदार) ने उनको ख्वाब में देखा तो पूछा : अल्लोह तआला ने क्या मुआमला फरमाया? ख्वाजा अहमद ने कहा: अल्लोह तआला ने मेरी कब्र में जन्नत का बिछौना बिछाया और मुझको जन्नत का कपडा पहनाया और देख मैं जन्नत में टहल रहा हूँ। कहा : क्यों? ख्वाजा अहमद ने कहा : एक दरुद शरीफ की वजह से जिसको मैं पढता था वो अल्लोह को बहुत पसंद आया। (जामिए करामातुल औलिया)

दुःख, टेन्शन दूर करनेवाला दरुद शरीफ

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ
وَسَلِّمْ وَأَذْهَبْ حُزْنَ قَلْبِي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ.

अल्लोहुम्म सल्लिअला सय्यिदिना मुहम्मदीन अल्लोहुम्म सल्लि अलैहि वसल्लिम
वअज्हिब हुजन कल्बी फिद दुन्या वल आखिरती

फजीलत : अगर किसी शख्स को कोई गम हो या दुःख हो या टेन्शन हो तो हुजूर   ने फरमाया : ये दरुद पढा करे, उसका दुख और गम दूर हो जाएगा। (जादुल मुत्तकिन)

हज़रत अली(रज़ि.अन्हु)का बताया हुआ बेहतरीन दरुद शरीफ

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مَنْ رُوحُهُ مَخْرَابُ الْأَرْوَاحِ. اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مَنْ هُوَ إِمَامُ الْأَنْبِيَاءِ
وَالْمُرْسَلِينَ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مَنْ هُوَ إِمَامُ أَهْلِ الْجَنَّةِ عِبَادِ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ .

अल्लोहुम्म सल्लिअला मन रुहुहू मिहराबुल अरवाही अल्लोहुम्म सल्लि अला मन हुव इमामुल अम्बियाइ
वल मुर्सलीन. अल्लोहुम्म सल्लि अला मन हुव इमामु अहलिल जन्नति इबादिल्लाहिल मुअ्मिनीन.

फजीलत : एक मरतबा एक भिखारी (फकीर) ऐसे चार शख्सों के पास से गुजरा के जो बयतुल्लोह के सहन में बैठे थे। उन चारों में एक अबू जहल भी था। भिखारी ने आकर उनसे भीक मांगी तो चारों ने हज़रत अली   की तरफ इशारा किया के जो कअबह की दुसरी तरफ बैठे थे। भिखारी हज़रत अली   के पास गया तो उन्होंने कहा के मेरे पास तो कुछ नहीं, किसने तुझे मेरे पास भेजा? तो भिखारी ने चारों की तरफ इशारा किया हज़रत अली   समझ गए के ये मेरी मज़ाक कर रहे हैं। हज़रत अली   ने भिखारी से कहा के तेरी मुठ्ठी बंद कर और थोड़ी देर तक कुछ पढते रहे और कहा के ये मुठ्ठी उन लोगों के पास जाकर खोल। जब वहाँ जाकर भिखारी ने मुठ्ठी खोली तो मुठ्ठी में से सोने का टुकड़ा निकला। चारो तअजुब में पड गए। भिखारी ने कहा के खुदा की कसम! हज़रत अली   ने कुछ पढा तो हाथ में सोना निकला तो उन चारो में से तीन शख्स उठे जिनमें अबू जहल न था और हज़रत अली   से पूछा के आपने क्या पढा? तो हज़रत अली   ने जवाब दिया के एक दरुद शरीफ अल्लोह के रसूल   पर पढा जिससे ये बात बनी, तो वो तीनों मुसलमान हो गए। वो दरुद शरीफ ये हैं। (दीवानुस्सालिहीन)

आप ﷺ की ख्वाब में ज़ियारत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ . اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى جَسَدِ
مُحَمَّدٍ فِى الْاَجْسَادِ . اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى قَبْرِ مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُوْرِ . (القول البديع)

अल्लोहुम्म सल्लिअला रुही मुहम्मदिन फिल अरवाही अल्लोहुम्म सल्लि अला जसदि मुहम्मदिन
फिल अजसादी अल्लोहुम्म सल्लि अला कवरि मुहम्मदिन फिल कुबूरी

फजीलत : अल्लामा सखावी (रह.) ने फरमाया है के जो शरक्स ख्वाब में आप ﷺ
की ज़ियारत का इरादा रखे तो वो ये दरुद शरीफ पढ़ा करे। (अलकबलूल बदिअ)
* नोट : रात में सोने से पहले बा वुजू ये दरुद शरीफ पढ़ते पढ़ते सो जाए।

वो दरुद जो मुसा عليه السلام ने हुजूर पर पढ़ा था

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ خَاتِمِ الْاَنْبِيَاءِ وَمَعْدِنِ الْاَسْرَارِ
وَمَنْبَعِ الْاَنْوَارِ وَعَلٰى آلِهِ وَاَصْحَابِهِ اَجْمَعِيْنَ (مناصر الحنات)

अल्लोहुम्म सल्लिअला मुहम्मदिन खातमिल अम्बियाइ व मअ्दनिल
अस्रारि व मम्बइल अन्वारि व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन.

फजीलत : एक दिन कोहे-तूर पर हज़रत मुसा عليه السلام ने अल्लोह की जबान से हुजूर ﷺ की बहुत तारीफ
सुनी तो मुसा عليه السلام ने फरमाया : काश अल्लोह मुझको नबी न बनाता और आखरी नबी ﷺ का
उम्मी बनाता देता। तो अल्लोह तआला ने फरमया : ए मुसा! ये दरुद पढ़ और जो ये दरुद पढ़ेगा
उसको हुजूर ﷺ के उम्मी होने का शर्फ अता करुंगा! (मनासिरुल हसनात)

ऐसा दरुद जो कब्र को दुल्हन और कब्र वाले को दुल्हा बनाए

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَنْ صَلَّى عَلَيْهِ . اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَنْ لَمْ
يُصَلِّ عَلَيْهِ . اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تَتَّبَعِيْ اَنْ يُصَلِّيَ عَلَيْهِ . (سعادت دارين)

अल्लोहुम्म सल्लिअला मुहम्मदिन अदद मन सल्ला अलैही अल्लोहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन
अदद मल्लम युसल्लि अलैही अल्लोहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन कमा तम्बगी अंय युसल्ला अलैही

फजीलत : इमाम शाफिई (रह.) के विसाल के बाद उनके एक शागिर्द इब्ने हकम ने ख्वाब
में इमाम शाफिई को देखा तो पूछा: आपके साथ क्या मुआमला पेश आया? फरमाया: अल्लोह
ने मेरी कब्र को यूँ सजाया जैसे दुल्हन को सजाया जाता है और यूँ ने अमते मुझ पर निछावर
की गई जैसे दुल्हे पर करते हैं। मैंने पूछा : क्यों? आपने फरमाया एक दरुद मैंने पढ़ा था तो
अल्लोह तआला को ये दरुद बहोत पसंद आया और फरमाया : जो भी ये दरुद पढ़ेगा
उसकी कब्र के साथ वही मुआमला करुंगा जो तेरी कब्र के साथ किया। (सआदते दारिन)

❁ जामे कौसर हासिल करनेवाला दरुद शरीफ ❁

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَوْلَادِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ
وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَصْهَارِهٖ وَاَنْصَارِهٖ وَاَشْيَآءِهٖ وَ مُحِبِّيْهِ
وَأَمَّتِهٖ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ اجْمَعِينَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ • (القول المبدع)

अल्लोहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलिही व अस्हाबिही व औलादिही व अज़वाजिही
वजुरिय्यतिही व अहलि बैतिही व अस्हारिही व अन्सारिही व अशयाइही व मुहिब्बीहि
व उम्मातिही व अलैना मअहुम अज्मईन या अर्हमर राहिमीन.

फजीलत : हज़रत हसन बसरी (रह.) से रिवायत है के जो शरक्स ये चाहता हो के
हौज़े कौसर से लबालब जाम पिये उसे चाहिये के ये दरुद पढा करें। (अल्कबूल बदीअ)

❁ कारोबार की तरक्की के लिए ❁

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ اَفْضَلِ
صَلَوَاتِكَ بَعْدَ مَعْلُومَاتِكَ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ عَلَيْهِ • (गंजीन असरार)

अल्लोहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन अफज़ल
सलवातिक बिअदिदि मअलूमातिक वबारिक वसल्लिम अलैही

फजीलत : हज़रत मौलाना अन्वर शाह कश्मिरी(रह.)ने फरमाया के ये दरुद शरीफ
रोज़ाना पाबंदी के साथ पढना रोज़ी की बरकत का सबब है। (गंजीन असरार)

❁ नबी ﷺ का पसंदीदा अशआर ❁

اَلَا كُلُّ شَيْءٍ مَّا خَلَا اللّٰهَ بَاطِلٌ وَكُلُّ نَعِيمٍ لَا مَحَالَةَ زَائِلٌ (بخاری)

अला कुल्लु शैइम मा खलल्लोह बातिलुन व कुल्लु नईमिल ला महालत ज़ाईलुन
तर्जुमा : तवज्जुह से सुनो के अल्लोह तआला के बगैर हर चीज़ बातिल है और हर नेअमत
यकीनन फना होनेवाली है। * फजीलत : हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फरमाते हैं के हुज़ूर ﷺ
एक शायरी को बहुत पसंद करते थे और आप ﷺ ने उस शायरी को खुद की मुबारक
जबान से पढा और फरमाया के ये शायरी कितनी खूबसुरत है। जिस शायरी को
हज़रत लबैद رضي الله عنه ने कहा है, जो ये है। (बुखारी शरीफ)

❁ पीराने पीर शैख अ. कादिर जीलानी(रह.)का पसंदीदा दरुद शरीफ ❁

مَوْلَايَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

مُحَمَّدٌ سَيِّدُ الْكَوْنَيْنِ وَالثَّقَلَيْنِ وَالْفَرَقَيْنِ مِنْ غُرَبٍ وَمِنْ عَجَمٍ

मौलाय सल्लि वसल्लिम दाइमन अबदन अला हबीविक खैरिल खल्कि कुल्लिहिमि
मुहम्मदुन सय्यिदुल कौनैनि वस्सकलैन वल्फरिक्कैनि मिन उर्विव व मिन अजमिन
फजीलत : पीराने-पीर शैख अब्दुल कादिर जीलानी(रह.) का पसंद किया हुआ दरुद
शरीफ आपने फरमाया के ये दरुद शरीफ पढ़कर अल्लोह से दुआ मांगता हूं और जाइज
मकासिद को आसानी से हासिल करता हूं। (दिवानुस सालिहिन)

पीराने पीर शैख अ. कादिर जीलानी(रह.)का पसंदीदा अशआर

تو غنی از هر دو عالم من فقیر
روزِ محشر عذرهای من پذیر

گر تو می بنی حسابم ناگزیر
از نگاهِ مصطفیٰ پنهان بگیر
(دیوان الصالحین)

तू गनी अज़-हर दो आलम मन फकीर
रोज़े महशर उज़रहाये मन पज़ीर

गर तु मी बीनी हिसाबम नागुज़ीर
अज़ निगाहे मुस्तफा पिन्हां बि-यगीर

फजीलत : पीराने-पीर शैख अब्दुल कादिर जीलानी(रह.)के पसंद किये गये अशआर जो फारसी
जुबान में है। आप इन्हें तहज्जुद के वक्त अल्लोह तआला की बारगाह में पढ़ते थे। (दिवानुस सालिहिन)

परेशानी दूर करने का नववी नुस्खा

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا
وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذَّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا

(मज़हरी) तवक्कलतु अलल हय्यिल्लजी ला यमूतु अलहम्दु लिल्लाहिल्लजी लम यत्तखिज्ज वलदंव वलम
यकुल्लहू शरीकुन फिल मुल्कि वलम यकुल्लहू वलिय्युम मिनज़ज़ुल्लि व कब्बिरहु तकबीरा।

फजीलत : हज़रत अबू हरैरह رضي الله عنه फरमाते हैं के एक दिन मैं हुज़ूर ﷺ के साथ बाहर निकला,
इस तरह के मेरा हाथ आप ﷺ के हाथ में था। आप ﷺ एक ऐसे शख्स के पास से गुजरे जो
बहुत ही फटीचर हाल और परेशान था। आप ﷺ ने पूछा के तुम्हारी ये हालत किस तरह हो गई?
तो उसने कहा के बिमारी और मुफलिसी की वजह से ये हालत है। तो आप ﷺ ने फरमाया के मैं
तुम्हे चंद कलिमात बतलाता हूँ उसे पढ़ोगे तो तुम्हारी बिमारी और मुफलिसी दूर हो जाएगी वो
कलिमात ये हैं। थोड़ी मुदत के बाद आप ﷺ उस तरफ तशरीफ ले गए तो उसे अच्छी हालत में
देखा। तो आप ﷺ ने खुशी जाहिर की। फिर उस शख्स ने कहा के जब से आप ﷺ ने हमें ये
कलिमात बतलाए हैं तब से मैं पाबंदी से इसे पढ़ता हूँ। (मज़हरी)

मुसीबतों से बचने का वजीफा

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ مَا شَاءَ اللَّهُ
كَانَ وَمَالِهِ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي
وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ أَنْتَ أَنْتَ اخِذْ بِنَاصِيَّتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

अल्लोहुम्म अन्त रब्बी ला इलाह इल्ला अन्त अलैक तवक्कलतु व अन्त रब्बुल अर्शिल करीम
माशा अल्लोहु कान वमा लम यशल् लम यकुन वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल
अलियिल अज़ीम अल्म अन्नल्लोह अला कुल्लि शैइन कदीर व अन्नल्लोह कद अहात
बिकुल्लि शैइन इल्मा अल्लोहुम्म इन्नी अऊजु बिक मिन शरि नफसी वमिन शरि कुल्लि
दाव्वतिन अन्त आखिजुम बिनासियतिहा इन्न रब्बी अला सिरातिम मुस्तकीम

फजीलत : एक शख्स हज़रत अबू दर्दा رضي الله عنه की खिदमत में हाज़िर हुवा और कहा के
आपका मकान जल गया, तो आपने कहा के नहीं जला। फिर दूसरे शख्सने आकर यही
खबर दी तो फरमाया के आग नहीं लगी। फिर तिसरे शख्सने आकर यही खबर दी तो
फरमाया के आग नहीं लगी। फिर शख्स ने आकर कहा के अबू दर्दा ! आग के शोले थे मगर
जब आपके घर के पास आग पहुँची तो बुझ गई। तो फरमाया के मुझे खबर थी के अल्लोह
पाक ऐसा नहीं करेगा के मेरा घर जल जाए। क्यों की मैंने रसूलुल्लोह ﷺ से सुना है के जो
शख्स सुबह ये दस कलिमात पढ़ लेगा उसे शाम तक तकलीफ नहीं पहुँचेगी वो दस
कलिमात ये हैं। (अबू दाऊद)

सवारी की दुआ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَالسَّمُوتُ
مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَهَا
وَمُرْسَهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ •

बिस्मिल्ला हिरहमा निरहीम. वमा कदरुल्लोह हक्क कदरिही वलअर्जु जमीअन कब्जतुहू
यौमल कियामति वस्समावातु मत्विय्यातुम वियमीनिही सुब्हानहू व तआला अम्मा
युश्रिकून. बिस्मिल्लाहि मजरेहा वमुर्साहा इन्न रब्बी लगफूरर रहीम.

फजीलत : हज़रत अब्दुल्लोह इब्ने अब्बास رضي الله عنه ने फरमाया: नबीए करीम ﷺ ने फरमाया :
मेरी उम्मत जब किसी सवारी पर सवार हो और ये दुआ पढ़ेगी तो अल्लोह तआला हर किस्म
की आफत (अक्सिडेन्ट) वगैरह से महफूज रखेगा.

आखिरत में इज्जत व इकराम से सफराज़ करनेवाला दरुद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى آلِهِ
وَاَصْحَابِهِ وَسَلِّمْ عَدَدَ مَا عَلِمْتَ وَزَيْنَةَ مَا عَلِمْتَ
وَمِلْءَ مَا عَلِمْتَ

अल्लोहुम्म सल्लिअला मुहम्मदि निन नबिय्यिल उम्मिय्यि व अला आलिही व अस्हाबिही
वसल्लिम अदद मा अलिम्त व ज़ीनत मा अलिम्त वमिलअ मा अलिम्त

फजीलत : हज़रत शरीफ नोमानी रह. फरमाते हैं के मैंने ख्वाब में अल्लोह के रसूल ﷺ और हज़रत अबूबकर सिद्दिक ﷺ को देखा और मैंने देखा के मेरे मरहूम शैख हनफी भी बैठे हैं। मैंने शैख को कहा: हज़रत! आपको ये मकाम कैसे हासिल हुवा? शैख मुहम्मद हनफी ने फरमाया : एक दरुद शरीफ पढ़ता था जिसकी वजह से ये मकाम मिला है। फिर उन्होंने दरुद शरीफ सुनाया। जब मेरे शैख दरुद से फारिग हुवे तो हुज़ूर ﷺ ने अपना अमामा उतारा और हज़रत अबूबकर ﷺ को कहा के मुहम्मद हनफी के सर पर ये बांध दो। (सआदते दारैन)

अज़ीम दरुद शरीफ

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا اَتَمِّ الْفَضْلِ عَلٰى الْبَرِّيَّةِ يَا بَاسِطَ الْيَدَيْنِ بِالْعَطِيَّةِ
يَا صَاحِبَ الْمَوَاهِبِ السَّنِيَّةِ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
خَيْرِ الْوَرَى سَجِيَّةً وَاغْفِرْ لَنَا يَا ذَا الْعُلَى فِي هَذِهِ الْعَشِيَّةِ ط (مَبْنِيْم)

अल्लोहुम्म या दाइमल फज़लि अलल वरिय्यति या बासितल यदैनि बिल अतिर्य्यति
या साहिबल मवाहिबिस्सनिय्यति सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदीन खैरिल वरॉ
सजिय्यतंव वगफिरलना या ज़ल उला फी हाज़िहिल अशिय्यति

फजीलत : जो शख्स ऊपर के दरुद शरीफ को जुम्आ की रात में (जुमेरात सूरज डूबने के बाद) १० मरतबा पढ़ेगा तो अल्लोह पाक उसके १० करोड गुनाह मुआफ कर देंगे, १० करोड नेकियाँ देंगे और उसके १० करोड दर्जे बुलंद करेंगे। ये दरुद शरीफ पढ़नेवाले को आखिरत में बहोत बड़ा अजर मिलेगा। (हुब्बे नसीम)

जज़्जत में महल मिलने का जरीया

फजीलत : हुज़ूर अकरम ﷺ फरमाते हैं के अल्लोह तआला फरमाता है के मेरी बुजुर्गी, इज़्ज़त और जलाल की कसम ! जो कोई जुम्आ के दिन ये दरुद शरीफ पढ़ेगा तो कयामत के दिन उसका हाथ मेरे महबूब ﷺ के हाथ में होगा और वो शख्स मेरे महबूब ﷺ के झंडे

के नीचे होगा । इसी तरह इस दरुद शरीफ के हर हर्फ के बदले उसे जन्नत में एक महल दूंगा वो अज़ीम दरुद शरीफ ये है। (शौके आखिरत)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِحَقِّكَ الْعَظِیْمِ وَبِحَقِّ عَرْشِكَ الْعَظِیْمِ وَبِحَقِّ نُورِ
وَجْهِكَ الْكَرِیْمِ وَبِحَقِّ مَا حَمَلَ كُرْسِیُّكَ مِنْ عَظَمَتِكَ وَجَلَالِكَ وَجَمَالِكَ
وَبِهَآئِكَ وَقَدْرَتِكَ وَسُلْطَانِكَ وَبِحَقِّ اِسْمِكَ الْمَخْزُوْنِ الْمَكْنُوْنِ الَّذِیْ
سَمَّیْتَ بِهِ نَفْسَكَ وَاَنْزَلْتَهُ فِیْ كِتَابِكَ اَوْ عَلَّمْتَهُ اَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ
اَوْ اسْتَاثَرْتَ بِهِ فِیْ عِلْمِ الْغِیْبِ عِنْدَكَ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی
اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ، وَاَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ بِاِسْمِكَ الَّذِیْ وَ
ضَعْتَهُ عَلٰی اللَّیْلِ فَاطْلَمَ وَعَلٰی النَّهَارِ فَاسْتَنَارَ وَعَلٰی السَّمَوٰتِ فَاسْتَقَلَّتْ
وَعَلٰی الْاَرْضِ فَاسْتَقَرَّتْ وَعَلٰی الْجِبَالِ فَرَسَتْ وَعَلٰی الصَّعْبَةِ فَذَلَّتْ
وَعَلٰی مَآءِ السَّمَاۤءِ فَسَكَبَتْ، وَاَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ بِمَا سَأَلْتَكَ بِهِ سَیِّدُنَا مُحَمَّدٌ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ، وَاَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ بِمَا سَأَلْتَكَ بِهِ سَیِّدُنَا اٰدَمُ عَلَیْهِ
اِسْلَامٌ، وَاَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ بِمَا سَأَلْتَكَ بِهِ سَیِّدُنَا مُحَمَّدٌ وَاَنْبِیَآئِكَ وَرُسُلِكَ
وَمَلَائِكَتِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ، وَاَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ بِمَا سَأَلْتَكَ
بِهِ اَهْلُ طَاعَتِكَ اَجْمَعِیْنَ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا
مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا خَلَقْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَكُوْنَ السَّمَاۤءُ مُبِیْنَةً وَّ الْاَرْضُ مُطْحِیَّةً
وَّ الْجِبَالُ مُرْسِیَّةً وَّ الْعُیُوْنُ مُنْفَخِرَةً وَّ الْاَنْهَارُ مُنْهَمِرَةً وَّ الشَّمْسُ
مُضْحِیَّةً وَّ الْقَمَرُ مُنْدِیَّآً وَّ الْكَوَاكِبُ مُنِیْرَةً عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ
وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمَدَادَ كَلِمَاتِهِ وَمَبْلَغَ عِلْمِهِ وَمُنْتَهٰی رِضَاۤئِهِ